# ‘ राजनैतिक सहमति निर्माण द्वारा ग्रामीण युवाओं में सामाजिक विघटन एवं समाजकार्य हस्तक्षेप ’

**( विशेष संदर्भ : गाजीपुर जनपद )**

# ‘Social Disorganisation in Rural Youth by Political Manufacturing Consent & Social Work Intervention’

(Special Context: Ghazipur District)

म. गां. फ्यूजी गुरुजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र में एम.फिल. उपाधि की आंशिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र : 2016-17

शोधार्थी

**छविनाथ यादव**

एम.फिल. समाजकार्य

पंजी. सं. - 2016/05/211/018

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाजकार्य अध्ययन केंद्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र) भारत

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| **अध्याय प्रथम** – | भूमिका | 1-7 |
| **अध्याय द्वितीय** – | साहित्य पुनरावलोकन | 8-31 |
| **अध्याय तृतीय** – | राजनैतिक सहमति निर्माण: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि | 32-62 |
| **अध्याय चतुर्थ** – | आंकड़ों का विश्लेषण | 63-85 |
| **अध्याय पंचम** – | सैद्धांतिकरण एवं संभावित समाजकार्य हस्तक्षेप | 86-94 |
| **संदर्भ ग्रंथ सूची** | | i-iii |
| **परिशिष्ट अ -** | शोध प्रश्न अनुसूची | i-iii |

# चित्र


| क्रमांक संख्या | पृष्ट संख्या |
|---|---|
| चित्र 4.1 | 63 |
| चित्र 4.2 | 64 |
| चित्र 4.3 | 65 |
| चित्र 4.4 | 66 |
| चित्र 4.5 | 77 |
| चित्र 4.6 | 68 |
| चित्र 4.7 | 69 |
| चित्र 4.8 | 70 |
| चित्र 4.9 | 71 |
| चित्र 4.10 | 72 |
| चित्र 4.11 | 73 |
| चित्र 4.12 | 74 |
| चित्र 4.13 | 75 |
| चित्र 4.14 | 76 |
| चित्र 4.15 | 77 |
| चित्र 4.16 | 78 |
| चित्र 4.17 | 79 |

चित्र 4.18 80

चित्र 4.19 81

चित्र 4.20 82

चित्र 4.21 83

चित्र 4.22 84

चित्र 4.23 85

# प्रथम अध्याय

# भूमिका

# (Introduction)

## 1.1. प्रस्तावना (Introduction)

**सहमति निर्माण (manufacturing consent) शब्द का अनुप्रयोग नॉम चामस्की ने किया था। उन्होंने इस शब्द को अमेरिका के पत्रकार वाल्टर लिपमैन एवं उनकी पुस्तक 'पब्लिक ओपिनियन' से लिया**[1]। सहमति निर्माण के संदर्भ में अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे- अधिप्रचार (propaganda), मनोवैज्ञानिक युद्ध (psychological war), युद्ध कला (warfare) आदि।

सहमति निर्माण के द्वारा आवाम की तार्किकता का संहार राजनेता, धर्मगुरु, कारपोरेट घराने अपने हितों को साधने के लिए करते हैं। इसके द्वारा जनता की भावनाओं को भड़काया जाता है ताकि उनका स्वहित में प्रयोग किया जा सके। दूसरे अर्थ में कहा जा सकता है कि सहमति निर्माण नकारात्मक चीजों को इस प्रकार गढ़ने की कला है जो जनता को सकारात्मक दिखने लगती है। **सहमति निर्माण में सच्चाई झलकती है मगर सच्चाई नहीं होती है**[2]। जनता को अहसास करवाया जाता है कि मैं आपके लिए हूँ, आपके लिए कर रहा हूँ। मगर सच्चे अर्थों में कुछ प्रदान नहीं किया जाता है।

सहमति निर्माण (manufacturing consent) के इतिहास पर अगर ध्यान केंद्रित किया जाये तो यह मानव जीवन में पाषाण काल से ही प्रयोग में होता आ रहा है। प्रारम्भ में मनुष्य जंगलों में रहने के कारण जंगली जानवरों से बचने के लिए विविध भांति का भेष बदलकर रहता था। यह जानवरों को धोखा देने की उसकी चालाकी थी[3]। इसके अलावा दूसरे कबीले को धोखा देने और पराजित करने के लिए सहमति निर्माण का प्रयोग करता था। बेबीलोन की सभ्यता में राजा एवं धर्मगुरु जनता को भय दिखाकर विश्वास प्राप्त करने हेतु खुद को ईश्वर का प्रतिनिधि बताते थे[4]। एरोसियन एवं वेविलोनियन युद्ध में एरोसियन का राजा वेविलोन के राजा को धोखेबाज कहकर अपने सैनिकों का विश्वास प्राप्त किया। मध्ययुग जिसे 'अंधयुग' भी बोलते हैं, में ईसाई चर्च का वर्चस्व था। पोप ईसाई धर्म का सर्वसिद्ध गुरु होता था। पोप एवं चर्च के आड़ में अनेक प्रकार के असामाजिक कार्य पोप की सहमति निर्माण (अधिप्रचार) के द्वारा किए जा रहे थे। यहाँ तक कि चर्च एवं उनके धर्मगुरु लोग पापी व्यक्तियों को स्वर्ग

[1] Chomsky. (2004).*letters from Lexington: Reflexions on propaganda*.
[2] Jwett, G. (2012). *Propaganda and persuasion*.
[3] Taylor. (2008). *A history of propaganda from the ancient world to the present era.*
[4] Taylor. (2008). *A history of propaganda from the ancient world to the present era.*

में भेजने के लिए धन लेकर टिकट भी बेचने लगे थे। यह धार्मिक और सामाजिक सहमति निर्माण का बेहतर दृष्टांत है। पुनर्जागरण काल के आविर्भाव एवं धर्मसुधार आंदोलन के बाद लोकतान्त्रिक राष्ट्रराज्य की व्युत्पत्ति हुई। सामंतवाद पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की विजय के साथ राष्ट्र-राज्यों का विश्व जीतने का महा अभियान चला। इस अभियान में यूरोपीय राष्ट्र अंतिम रूप से अगुवा थे। फिर सहमति निर्माण (अधिप्रचार) का दौर चला। पूरी दुनिया में यूरोपीय संस्कृति को श्रेष्ठ साबित किया गया। दुनिया को सभ्य बनाने का नारा दिया गया। इन सबके आड़ में उपनिवेश एवं साम्राज्यवाद का गहन खेल खुद के हित में इन देशों ने खेला। ब्रिटेन प्रथम विश्वयुद्ध में अपने घोषणा-पत्र में विधिवत सहमति निर्माण का प्रयोग किया। उदाहरण के लिए भारतीय जनता का समर्थन इस शर्त पर लिया गया कि विश्वयुद्ध के बाद तुर्की के खलीफा की स्वतन्त्रता कायम रहेगी और भारत को अधिकतम स्वराज्य प्रदान कर दिया जाएगा। मगर युद्ध के बाद तुर्की के खलीफा को अपदस्थ करके वहाँ लोकतन्त्र की स्थापना कर दी गई और भारत में रोलेक्ट एक्ट जैसा काला कानून लाया गया। अमेरिका द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरी दुनिया में क्यूबा एवं वियतनाम जैसे मुल्कों पर लोकतन्त्र के नाम पर आक्रमण किया और वियतनाम और लाओस पर इस प्रकार कहर बरपाया कि आज भी वहाँ के लोगों की उन दिनों को याद करने पर रूह काँप उठती है। आज भी पूरी दुनिया में संयुक्त राज्य अमेरिका आतंकवाद एवं लोकतन्त्र की स्थापना के नाम पर सहमति निर्माण (अधिप्रचार) का खेल अपने हित के लिए खेल रहा है।

सहमति निर्माण का एक चेहरा और भी है; आज राजनैतिक दल एवं राजनेता इसका व्यापक प्रयोग करके आवाम के मनोवृत्ति को अपने हितों में मोड़ रहे हैं। चारों तरफ भ्रम बेचा जा रहा है। भ्रम और धोखा बेचने के क्रम में मीडिया के विविध माध्यमों का प्रयोग भी किया जाता है जहां खबरें होती नही बनाई जाती है। **सच्ची खबरों को अधिकांशत: राजनीति, कारपोरेट और मीडिया इन तीनों की तिकड़ी मिलकर आवाम तक जाने से रोक देती है**[5]। भारत एक लोकतान्त्रिक राष्ट्र राज्य है। यहाँ सार्वभौमिक मताधिकार द्वारा जनता अपनी सरकार प्रतिनिधि प्रणाली द्वारा चुनती है। चुनाव प्रक्रिया तीन स्तरों की पायी जाती है-

1. संघ सरकार का चुनाव।
2. राज्य सरकार का चुनाव।
3. पंचायती चुनाव।

[5] Chomsky,N.(1988).Manufacturing consent: the political economic of mass media.

भारतीय मुल्क की जनता लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करती है।स्वतन्त्रता के बाद का सत्तर साल की जनतांत्रिक सरकार इस बात का प्रमुख उदाहरण है। बदलते समय के साथ देश के राजनैतिक मूल्यों में गिरावट आई है। राजनेता राजनीति को धनलाभ, पदलाभ, मानलाभ और सुखलाभ का माध्यम मान चुके हैं। अपने इन स्वार्थों को सिद्ध करने के लिए आज राजनेता किसी भी हाल में सत्तासीन होना चाहते हैं। इसके लिए वृहद स्तर पर अधिप्रचार का सहारा लिया जाता है। इसके द्वारा भारतीय युवाओं को भ्रमित किया जाता है। उनमें हिंसा, जातिवाद, धर्मांधता, क्षेत्रवाद, भाषावाद जैसे सामाजिक विघटनकारी शक्तियों को बढ़ावा दिया जाता है। इन सबके कारण भारतीय समाज में व्यक्तिगत एवं सामुदायिक विघटन को दोनों स्तरों पर बढ़ावा मिलता है। एक अध्ययन के मुताबिक हर चुनावी प्रक्रिया (संसदी चुनाव, विधानमण्डल चुनाव एवं पंचायती चुनाव) के बाद समाज में सहयोग, सहानुभूति, सामूहिकता एवं हम की भावना कम होती जा रही है और सामाजिक विघटन की दर हर चुनाव के उपरांत बढ़ती जा रही है। जिसका सर्वाधिक शिकार युवा वर्ग हो रहा है।

## 1.2. लघु शोध का भौगोलिक अध्ययन क्षेत्र (Geographical Area Research)

इस शोध का भौगोलिक अध्ययन क्षेत्र, उत्तरी भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का गाजीपुर जिला है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति बिहार राज्य के पश्चिमी सीमा से लगी हुई है वहीं गाजीपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल भाग में पड़ती है। गंगा नदी इस जिले के मध्य से गुजरती है। गाजीपुर का संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल 3384 वर्ग किमी है। जिले में कुल पाँच तहसीलें (जाखानियाँ, मोहमदाबाद, सैदपुर, जमनियाँ एवं गाजीपुर सदर) हैं। इस जिले में कुल गांवों की संख्या 597 है। 2011 के जनगणना के अनुसार जिले में कुल मानव जनसंख्या 3,622,727 है ; जिसमें से 3,378,855 ग्रामीण जनसंख्या तथा 273,872 शहरी जनसंख्या है। जिले की कुल साक्षरता 74.24% है। जिसमें 73.62%ग्रामीण एवं 82.05% शहरी साक्षरता है[6]।

## 1. 3. लघु शोध की केंद्रीय समस्या (Central Problem of Research)

"राजनैतिक सहमति निर्माण द्वारा युवाओं में सामाजिक विघटन" इस शोध की केंद्रीय समस्या है। आज युवाओं में राजनैतिक महत्वाकांक्षा बढ़ रही है जिसका फायदा राजनैतिक दल अपने-अपने हितों में भुना रहे हैं। धर्म, जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र के आधार पर इन युवाओं को राजनैतिक दल बाँट लेते हैं। जिसके

[6] District census( 2011)

कारण युवाओं में सामाजिक एकता के जगह सामाजिक विघटन को बढ़ावा मिल रहा है। अतः इस शोध में इस बात का अध्ययन किया गया है कि किस प्रकार राजनैतिक दल अपना फायदा युवाओं को भ्रमित करके निकाल रहे हैं और युवाओं में सामाजिक विघटन को बढ़ावा दे रहे हैं। इस लिए प्रस्तुत शोध का चयन किया गया है।

## 1.4. शोध की सीमा (Limitation of Research)

इस शोध विषय की निम्नलिखित सीमाएं हैं –

1. इस शोध में प्राथमिक आंकड़ों पर अधिक निर्भरता रखी गयी है।
2. इस शोध में अध्ययन विषय को अधिक से अधिक बड़ा रखने का प्रयास किया गया है।
3. अवश्यकतानुसार इस शोध में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।
4. इस शोध में गाजीपुर के ग्रामीण क्षेत्रों के पुरुष वर्ग के युवाओं को ही केवल अध्ययन हेतु सम्मिलित किया गया है जो इस अध्ययन क्षेत्र की सीमा है।

## 1.5. लघु शोध के आधारभूत प्रश्न (Basic Research Questions)

1. क्या ग्रामीण युवा सहमति निर्माण संप्रत्यय से परिचित हैं?
2. क्या राजनैतिक सहमति निर्माण द्वारा युवाओं में सामाजिक विघटन को बढ़ावा दिया जा रहा है?
3. धर्म, जाति, वर्ग, लिंग में से किसका इस्तेमाल करके सर्वाधिक राजनीति सहमति निर्माण कर रहे हैं और युवाओं में सामाजिक विघटन को बढ़ावा मिल रहा है?
4. राजनैतिक सहमति निर्माण द्वारा किस वर्ग (साक्षर, सामान्य शिक्षित, मध्यम शिक्षित, उच्च शिक्षित) के युवाओं में सर्वाधिक सामाजिक विघटन को बढ़ावा मिला है?
5. राजनैतिक सहमति निर्माण द्वारा युवाओं मे पैदा किए जा रहे विघटन को कम करने हेतु संभावित समाज कार्य हस्तक्षेप क्या है?

## 1.6. लघु शोध का उद्देश्य (Objectives of Research)

1. सहमति निर्माण की संकल्पना का अध्ययन करना।

2. राजनैतिक सहमति निर्माण के ग्रामीण प्रचार माध्यमों को जानना।
3. युवाओं में राजनैतिक महत्वाकांक्षा एवं सामाजिक विघटन को जानना।
4. राजनैतिक सहभागिता निर्माण एवं युवाओं के जीवन के आर्थिक पक्ष के मध्य संबंधों को जानना।

## 1.7. संकल्पनीकरण(Conceptualization)

**1.7.1. सहमति निर्माण :** इस शोध में सहमति निर्माण एवं अधिप्रचार दोनों शब्दों को समान अर्थ में देखा गया है। जिसका अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें सहमति निर्माणकर्ता व्यक्ति एवं समाज दोनों की राय और बदलने में सक्षम हो जाता है। इस बदलाव के पीछे सहमति निर्माणकर्ता का येन-केन प्रकारेण स्वार्थ छिपा रहता है।

**1.7.2. युवा :** इस शोध में युवा से तात्पर्य उन लोगों से हैं जिनकी उम्र 18 वर्ष पूरी हो चुकी हो मगर 35 वर्ष से अधिक न हो।

**1.7.3. साक्षर :** इस शोध में साक्षर से अभिप्राय उन युवाओं से है जिन्होंने दसवीं कक्षा की अहर्ता प्राप्त कर ली हो पर इससे अधिक न हो।

**1.7.4. सामान्य शिक्षित :** इस शोध में सामान्य शिक्षित वर्ग के अंतर्गत वे युवा आए है जो कक्षा 12 वीं पास कर चुके हैं पर इससे ज्यादा नहीं हैं।

**1.7.5. उच्च शिक्षा :** इस शोध में उच्च शिक्षित युवा से अभिप्राय स्नातक एवं स्नातकोत्तर या इससे अधिक अहर्ता प्राप्त युवा हैं।

**1.7.6. सामाजिक संगठन :** इस शोध में सामाजिक संगठन शब्द से तात्पर्य व्यक्तियों में सहयोग की भावना, सामुदायिक भावना एवं सहिष्णुता के सम्मिलित रूप से है।

**1.7.7. सामाजिक विघटन :** इस शोध में सामाजिक विघटन प्रत्यय का प्रयोग सहयोग भावना की कमी, सामुदायिक भावना की कमी एवं वैयक्तिक सोच के बढ़ावा से उत्पन्न संघर्ष है।

**1.7.8. व्यक्तिगत विघटन :**इस शोध में 'व्यक्तिगत विघटन प्रत्यय' का प्रयोग सहयोग भावना की कमी, सामुदायिक भावना की कमी एवं वैयक्तिक सोच से बढ़े संघर्ष से है।

**1.7.9. ग्राम :** इस शोध में ग्राम से तात्पर्य ग्राम पंचायतें हैं।

## 1.8. लघु शोध का प्रारूप ( Research Design )

इस शोध में गाजीपुर के 18-35 वर्ष के युवाओं को सम्मिलित किया गया है। गाजीपुर में कुल 5 तहसीलें हैं। प्रत्येक तहसील से प्रतिदर्श हेतु एक-एक गाँव का चयन किया गया है और प्रत्येक गाँव से 25-25 प्रतिदर्श इकाई का चयन प्रदत्त संकलन हेतु किया गया है। इस प्रकार प्रतिदर्श के प्रकृति के आधार पर बहुआयामी स्तरीय संभावित प्रतिदर्श (Multi stratified Probability sampling) का प्रयोग किया गया है।

## 1.9. शोध में अध्ययन इकाई का चयन (Study unit of Research)

इस शोध में गाजीपुर के 18-35 वर्ष के युवा सम्मिलित किए गए हैं। गाजीपुर जिले में 5 तहसीलें हैं। प्रत्येक तहसील में एक –एक गांवों का चयन प्रतिदर्श हेतु किया गया है। प्रत्येक गाँव से 25-25 युवाओं का चयन लाटरी विधि से किया गया है।

## 1.10. तथ्यों के संकलन की तकनीकी एवं विधियाँ (Tools & Technique and Method of Data Collection )

- **प्राथमिक स्रोत**

**1. अनुसूची :** इस शोध में उत्तरदाता हेतु केवल बंद अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

**2. साक्षात्कार :** उतरदाताओं के साक्षात्कार के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ ग्रामीणों का साक्षात्कार विषय की समझ हेतु इस शोध में लिया गया है।

**3. अवलोकन :** प्रत्येक संदर्भित ग्राम सभा का असंरचित अवलोकन आंकड़ों के संग्रह के समय एवं इससे पूर्व किया गया है।

●**द्वितीयक स्रोत**

**1. संबंधित पुस्तकें :** इस शोध मे विदेशी एवं भारतीय लेखकों के पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। जिसमें नॉम चामस्की, कुलदीप नैयर, राम पुनियानी, विभूति नारायण राय प्रमुख हैं।

**2. संबंधित पत्र- पत्रिकाएँ :** इस शोध में दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, टाइम्स ऑफ इंडिया जैसे अखबारों के साथ-साथ इंडिया टुडे तथा इंडिया टाइम्स पत्रिका का अध्ययन किया गया।

**3. संबंधित वीडियो :** इस शोध में मुजफ्फरनगर के दंगे पर बनी डाक्यूमेंटरी 'मुजफ्फरनगर अभी बाकी हैं' के अलावा 2014 के चुनाव के रैलियों के वीडियो को देखा गया है।

## 1.11. पायलट स्टडी (Pilot Study )

- वास्तविक पायलट स्टडी - मात्र गांवों का अवलोकन किया गया।
- कृत्रिम पायलट स्टडी - कृत्रिम पायलट स्टडी सुल्तानपुर ग्राम में युवाओं पर किया गया जो वास्तविक प्रतिदर्श का 10% था।

## 1.12. आंकड़ों का प्रसंसीकरण ( Data Processing )

इस लघु शोध में आंकड़ों के प्रसंसीकरण के लिए रेखाचित्र, पाईचार्ट आदि का प्रयोग किया गया है। वही संदर्भ ग्रंथ सूची एपीए प्रारूप में लिखा गया है।

## 1.13. लघु शोध का अध्यायीकरण (Chapterisation of Research)

- अध्याय प्रथम **:** सहमति निर्माण : समान्य परिचय
- अध्याय द्वितीय : साहित्यिक पुनरावलोकन
- अध्याय तृतीय : राजनैतिक सहमति निर्माण: सैद्धांतिकीय पृष्ठभूमि
- अध्याय चतुर्थ : आंकड़ों का विश्लेषण
- अध्याय पंचम : सामान्यीकरण एवं संभावित समाजकार्य हस्तक्षेप

- संदर्भग्रंथ सूची (Bibliography)